Sanskritik aur Samajik Anusandhan
www.shodhjournal.com
ISSN: 2582-5852
Received: 03-03-2020; Accepted: 05-04-2020; Published: 14-04-2020
Volume 1; Issue 1; 2020; Page No. 29-31

श्री गुरू नानक देव

Rakesh Kumar
Assistant Professor, Department of History, Govt College Matanhail, Haryana, India

प्रस्तावना

आदि सिख गुरू श्री गुरू नानकदेवी जी को बाबा नानक, नानक शाह, सच्चा बादशाह आदि नामों से संबोधित किया गया है। आपका जन्म 15 अप्रैल सन् 1469 ईसवी में तलवंडी नामक स्थान में कल्याणचन्द नाम के एक परिवार के घर हुआ। तलवंडी आजकल 'ननकाना साहिब' के नाम से जाना जाता है। नानक जन्म से ही बड़े प्रखरबुद्धि, दूरदर्शी और व्यवहारकुशल बालक थे और बाल्यकाल में ही इन्हें प्रभुनाम स्मरण की लगन लग गई थी। औपचारिक शिक्षा में इनकी बिल्कुल रूची नहीं थी और वह सारा समय अध्यात्मचिंतन में लगाते थे। 16 वर्ष की आयु में इनका विवाह हुआ। श्री चन्द और लक्ष्मीचंद नाम के इनके दो पुत्र थे। गुरू नानक अपने व्यक्तित्व में दार्शनिक, योगी, ग्रहस्थ, धर्म–सुधारक, समाजसुधारक, कवि, देशभक्त और विश्वबन्धु सभी कुछ थे। ऐसे सर्वगुणसम्पन्न व्यक्ति कभी–2 ही जन्म लेते है।

सांस्कृतिक जागरण, आध्यात्मिक क्रांति व सामाजिक आंदोलन

'होनहार बिरवाण के होत चीकने पात' लोकोक्ति गुरूजी पर बिल्कुल खरी उतरती है। पाँच वर्ष की आयु में उन्हें पढ़ने के लिए गुरूजी के पास भेजा गया, परन्तु देखा गया कि अक्षर ज्ञान तथा औपचारिक पढन–पाठन में रूचि नहीं रखते। वह प्रायः ध्यान की अवस्था में आ जाते है। एक दिन उन्होंने अपने गुरूजी से पूछा–आप स्वंय क्या कुछ पढ़े हुए हैं? मुझे आप क्या पढ़ाएँगें? गुरूजी ने कहा –मैंने वेद और शास्त्र पढ़े हैं और गणित का भी अध्ययन किया है। इस पर नानक बोले, यह सब व्यर्थ है, किसी काम का नहीं यह ज्ञान, कोई लाभ नहीं इन विषयों से। ये विषय क्या आपको सांसारिक वासनाओं से छुटकारा दिला सकते है? जब तलवंडी भोप में किसी मकतब में मौलवीजी के पास भेजे गए लेकिन बजाय इसके कि मौलवीजी इन्हें पढ़ाते, यही मौलवीजी को पढ़ाने लग गए। भाषा का औपचारिक ज्ञान प्राप्त कर लेने या फिर शास्त्रों द्वारा बताए गए नियमों और सिद्वान्तों को रट लेने में तो वह गहरी अरूची रखते में।

गुरू नानकदेव जी के बाल्यकाल की एक घटना के अनुसार उनके माता–पिता ने उनके यज्ञोपवीत की योजना बनाई और उनके कुल पुरोहित पण्डित हरदयाल को यह काम सौंपा गया। उनके गले में जब वह यज्ञोपवीत डालने लगा तो नानक ने इसका महत्व पूछा जब वह इसका कोई संतोषजनक उत्तर न दे सका तो नानक ने कहा, 'पण्डित जी आप बजाय इस धागे के मुझे ऐसा धागा दीजिए जिसे पहनकर मुझमें दया और संतोष की भावनाएँ पैदा हो जाएँ, मैं संयमी और शुद्ध आधार वाला जीव बन जाऊँ और मेरी सांसारिक बासनाएँ नष्ट हो जाएँ। पण्डित जी अवाक्, क्यों कहें, क्या न कहें। तब नानक ने स्वयं ही एक ऐसे यज्ञोपवीत का वर्ण किया।

दइआ कपाह संतोषु सूतु जतु गंडी सतु वटु।
डोहु जनेऊ जीअ का हइ त पांडे घतु।
ना डहु तुटै न मलु लगै ना डहु जलै न जाइ।
धंन सु मानस नानका जो गलि चलै पाइ।

अर्थात् 'यदि दया की कपास हो, संतोष का सूत बने और इसे सत्य के बार दिए हों, तो इस तरह से जो जनेऊ बनेगा वह आत्मा के काम आएगा, उसे ऊँचा उठाएगा। पुरोहित अगर आपके पास ऐसा जनेऊ है। तो मेरे गले में डालो। यह जनेऊ न टूटेगा, न मैला होगा, न सडेगा और न नष्ट होगा 1

पिता कालू मेहता चाहते थे कि उनका बेटा सांसारिक धन्धो से किनाराकशी कर कही वैरागी न बन जाए। इसलिए उन्होंने बड़ी छोटी आयु में ही उन्हें व्यापार की शिक्षा देना शुरू कर दिया। एक बार उन्होंने नानक को कुछ धन देकर व्यापार करने के लिए भेजा परन्तु उन्हें कुछ भूखे साधु मिल गए और उन्होंने उन्हें खिलाने–पिलाने में ही सारी पूँजी खर्च कर दी। पूछे जाने पर बोले, ''मैंने खरा सौदा किया है।''

पिता कालू मेहता नाराज और निराश हुए उन्होंने उन्हें विवाह के बन्धन में बाँध दिया और उन्हें उनकी बहन के पास सुलतानपुर भेज दिया जहाँ बीबी नानकी के पति नौकरी करते थे सिफारिश से नानक को नबाब दौलत खान के मौदीखाने में नौकरी दिलवा दी। यहाँ भी उनका मन अपने काम की जगह अपने प्रभु में अधिक रमता था। वह जो भी कमाते गरीब–गुरबे, भूखे–नंगे, जरूरतमंदों में बाँट देते। एक बार वह कुछ सामान तराजू पर तोल रहे थे और परागे गिनते जा रहे थे। परन्तु गिनती ज्यों ही तेरह पर पँहुची वह तेरा–तेरा ही करते रह गए। एक प्रकाश झलका उनके भीतर और उन्हें लगा कि यह समूचा सृष्टिप्रसार उस प्रभु का ही है। अपना तो कुछ है ही नहीं।

आप गइआ सुखु पाइआ।
मिलि सललै सलल समाई। 2

श्रम का सम्मानः– सिख परम्परा में गुरू नानक जी जो यात्राए की उनको उदासी का नाम दिया गया अपनी पटली उदासी में नानक सबसे पहले सैयदपुर (आज का एमनाषाद–पाकिस्तान) पहुंचे जहां भाई लाले उनका भक्त बना। उन्होंने वहां के सबसे बड़े जमींदार भागों की दावत को ठुकराकर इस मेहनतकश निर्धन भक्त का आतिथ्य स्वीकार किया। यही उन्होंने सिद्व कर दिखाया कि भागों की रोटी में खून है और लालों की रोटी दूध से भरी है। इस प्रतीकमय लोकविश्वास में यह दर्शाया गया है कि नानक ईमानदारी और मेहनत की कमाई और जुल्म और शोषण की कमाई से अच्छा मानते थे। और श्रम से धन अर्जित करने और उससे पेट पालने की शिक्षा देते थे। 3

नानक सूर्यग्रहण के अवसर पर कुरूक्षेत्र पहुंच। यहां जगतराय नाम के उनके एक भक्त ने उन्हें मृग–मांस भेंट किया। मांस आदि पदार्थो को अखाध मानने वाले नानक ने इसे भक्त की भेंट मानकर आदरपूर्वक स्वीकर कर लिया और इसे पकने के लिए रख दिया। इस पर वहां एकत्र हुए ब्राह्मणों ने आपति की, जिस पर गुरूजी ने कहा कि मन की पवित्रता ही असली पवित्रता है। हमें खाद्य–अखाद्य पर बहुत ध्यान न देकर, नैतिक दृष्टि से शुद्व और पवित्र बनने का प्रयत्न करना चाहिए। नेक काम करने वाला ही नेक और शुद्व माना जाता है। नेक आदमी किरत की कमाई खाता है। 4

एक सलोक में वह कहते हैं, 'पराया हक खाना मुसलमान के लिए सुअर खाने के बराबर है और हिन्दू के लिए गोमांस भक्षण के तुल्य है। हिन्दू का गुरू तथा मुसलमान का पीर, पराया हक खाने वाले की प्रभु की दरगाह में बिल्कुल सिफारिश नहीं करते। अलबता यदि वे पराया हक रूप मुरदार खाना छोड़ दें तो उन्हें परमात्मा के हजूर में जरूर सम्मान मिल सकता है–

हकु पराया नानका उस सुअर उसु गाई।
गुरू पीरू हामा ता भरे जा गुरदार न खाई। 5

समतामूलक समाज बनाने का उपदेशः–

गुरू नानकदेव जी कहते थे कि चराचर सृष्टि में मूल तत्व तो एक ही है। उसी से यह समूचा सृष्टि प्रसार प्रकट हुआ है। इसलिए सब मनुष्य बराबर है। उन्होंने कहा कि सच में पढ़ा हुआ पण्डित वह है जो ज्ञान की सच्चाई जानता है। कि जब जीवों में हरि का वास है। जो व्यक्ति सब जीवों में एक ही प्रभु को ही देखता है उसमें अंहकार तो आ ही नहीं सकता।

सरब जिआ गहिए को जाणै
ता हऊमै कहै न कोइ।

गुरू नानकदेव जी जीवन–भर सामाजिक समता का प्रचार करते रहे है। वह कहते थे सबका मालिक एक प्रभु है। सबमें उसकी ज्योति जल रही है। अतः सबको ऊँचा– ऊँचा ही कहना चाहिए। कोई नीच तो है ही नहीं। प्रभु ने ही सब भाण्डे (मनुष्य शरीर) बनाए है (एक ही धातु से) और सब में एक ही लौ जगमगा रही है।

सभु को ऊचा आखिअै, नीचु न दीसै कोइ।
इकने भांडे साजिअै, इकु चानण तिहु लोइ।। 6

अन्धविश्वासों पर प्रहारः– नानक अनुभव से जानने पर अधिक बल देते है। ज्ञानी या विद्वान उनके मत में वह जो अनुभूत बात को ही सत्य मानता है, पढ़ी हुई बात को नहीं गुरू नानक कहते थे कि तीर्थो पर भटकने और नदी संगमों में स्नान कर लेने से न तो पाप धुलते हैं और न आधार–विचार में ही कोई सार्थक बदलाव आता है। बारह माह प्रकरण में नानक ने जीव स्त्री के मुख से कहलवाया है–'हे मेरे प्रभु प्रियतम मेरी बात सुनो। अगर मैं अपने हृदय में तुम्हारे गुण धारण करने की बतौलत तुम्हें भा जाऊँ तो मेरे लिए तो यही तीर्थो का स्नान होगा। यही मेरे लिए गंगा, यमुना अथवा त्रिवेणी का संगम है। और इसी से मैं मान लूँगी कि मैंने सात समुद्रों में स्नान कर लिया।

प्रीतम गुण अंके सुणि प्रभु षंके तुधु भांवा सरिन्हावां
गंग–जमुन तहदेणी संगम सात समुंद समांवा।।
पुत्र दान पूजा परमेसुर जुग–जुग एको जाता।
नानक माधि महारसु हरि जपि अठसठि तीरथ न्हाता।।

अपने एक सलोक में वह कहते हैं, पण्डित लोग अपनो घरों में ठाकुर की मूर्ति सहित बहुत से देवी–देवताओं की मूर्तियां स्थापित कर लेते है। उनकी पूजा करते हैं। और उन्हें स्नान करवाकर रखते हैं। वे उन्हें केसर और चन्दन लगाते हैं। और उन्हें फूल भेंट करते हैं वे इन मूर्तियो के चरणों पर सिर रखकर इन्हें प्रसन्न करते है। पर वे पण्डित मनुष्यों से माँग–माँगकर खाते–पहनते है। नानक कहते हैं कि वे मूर्तियों से नहीं माँगते क्योंकि वे तो दे नहीं सकती। आज्ञानता वाले कर्मकाण्ड करते रहने से मिलता तो कुछ नहीं उतरे अज्ञानता को बढ़ावा मिलता है। ठाकुर को मूर्ति न तो भूखों को रोटी दे सकती है और न मरने वालों को मौत से छुड़ा सकती है–

बाबर के अत्याचारों का वर्णनः–

कहा सुखेल घोडे कहा मेरी सहनाई
कहासु तेगबन्द गाढेरिडी कहासु लाल कहाई

गुरूजी सईदपुर अपने पुराने भक्त लालों के यहां पहुंचे। पीछे से बाबर अपने देश से मार खाकर भारतवर्ष पर हमला करता, लुटमार करता, बेगुनाहों को कत्ल करता हुआ आ रहा था। उसने स्थालकोट का सारा क्षेत्र जीत कर लूट लिया था। यह सारा दृश्य देखकर गुरू जी का हृदय भर आया। उनकी आंखों से आंसू फूट पड़े। वह पीड़ा भरे स्वर में मरदाणें से बोले–

''ख्वाब बनाओ मरदाने, वाणी आई है''
जिन सिरी सोहनि परिया मांगी पाये संदूरि
से सिर काती मुनानि, गलविधि आवे धूड़ि
महिलां अदरि हीदीयां हुगिं बहणि न मिलनी हदूरि।
अदिसु पाव, एदिसु.....

'आसा दी वार' में गाए एक पद में वह कहते हैं– हे कर्ता प्रभु, तुने खुरासान को तो बाबर के जुल्मों से बचा लिया लेकिन हिन्दुस्तान को भयभीत कर दिया है। हे प्रभु (इस जुल्मों से बचा लिया लेकिन हिन्दुस्तान को भयभीत कर दिया है। हे प्रभु (इस जुल्म और जवर के लिए), तुम अपने सिर पर तो कोई दोष नहीं लगने दे रहे पर मुगल हमलावर बाबर को भय का रूप बनाकर भेज दिया है इन (मुगल) कुतों ने टीरों जैसे मनुष्यों को मिट्टी में मिला दिया है और इतने हिन्दुस्तानी मरे है कि जिनकी गिनती तक नहीं हो सकती।

इस प्रकार गुरूजी ने तत्कालिन परिस्थितियो पर भी अपने विचार प्रकट किए है। 10

नारी जीवन का स्वरूपः– गुरू नानकदेव जी तो नारी को सभ्यता को जन्मदाती, मानवसृष्टि को मूलाधार एवं परिवार की प्रतिष्ठापिका मानते है। नारी से मानव अस्तित्व में आता है। वही इसे भीतर पालती है। नारी से ही सम्बन्ध स्थापित होता है। और उसी के साथ पाणिग्रहण होता है। समूचे सृष्टिक्रम को सूत्रधार और व्यावहारिक जीवन की पूर्णता का एकमात्र कारण होने से वह हमारी सबसे बड़ी मित्र है। उसे आकर्षण का असली केन्द्र तो उसमें गुण ही बनाते है। इन गुणों से ही वह पति का हृदय जीतती है और परिवार में प्रतिष्ठा का स्थान प्राप्त करती है। यदि वह अपने में गुणों का विकास नहीं करती तो उसके सब आडम्बर (वस्त्राभूषणों का प्रयोग, प्रसाधन, हाव–भाप आदि) व्यर्थ हो जाते है। यदि वह अपने में स्नेह, सद्भाव, दया, ममता, संयम, तप आदि गुणों का विकास कर लेती है। तो समझिए उसे सिद्वि मिल गई। इन गुणों के श्रंगृार से वह अपने प्रियतम का मन मोह सकती। और अखण्ड सौभाग्य प्राप्त कर सकती है। यदि कोई स्त्री अपनी देह पर इतर और चन्दन का चोखा लेप लगाती है, केसर तथा सिंदूर से मांग भरती है और पान के साथ कपूर का प्रयोग करती है। परन्तु यदि वह प्रिय को अच्छी नहीं लगती तो उसके ये सब उपचार व्यर्थ है। 11

घरि नाराइणु सभा नालि।
पुजा करे रखै नावालि।।
कुगूं चंनणु फुल चढ़ाए।
पैरीं पै पै बहुतु मनाए।।
माणूआ मंगि–मंगि पैने खाइ।
अंधी कम्मीं अंध सजाइ।।
भुखिआ देइ न मरदिआ रखै।
अंधा झगड़ा अंधी सबै।।

गुरूजी कुरूक्षेत्र होते हुए जब हरिद्वार पहुंचे तो उन्होंने देखा कि बहुत से लोग पूर्व की और मुँह कर अपने पितरों को पानी दे रहे है। उन्होंने वहां बिना कुछ बोले पश्चिम की और पानी उछालना शुरू कर दिया। जब उनसे पूछा गया कि वह यह क्या कर रहे है तो उन्होंने बेषाकी से कहा पश्चिम की और मेरे खेत हैं। मैं उन्हें पानी दे रहा हूँ। जब लोग उनके इस उत्तर पर हँस पड़े तो उन्होंने गम्भीर होकर कहा, 'जबकि आपका दिया जल लाखों–करोड़ों मील दूर बैठे आपके पूर्वजों तक पहुंच सकता है तो मेरा दिया पानी सिर्फ सैकड़ों मील की दूरी पर स्थित खेतों तक क्यों नहीं पहुंच सकता। 7

पाखण्ड खण्डनः– जगतनाथ मन्दिर पूरी में जब भगवन की आरती उतारी जा रही थी नानक जी उसमें सम्मिलत नहीं हुए तो लोगों ने पूछा आप आरती में क्यो शामिल नहीं हुए तब आपने कहा एक मात्र जगन्नाथ स्वयं प्रभु परमेश्वर है जो कि सर्वव्यापक है। अतः यह एक नन्हीं सी मूर्ति कैसे जगन्नाथ हो सकती है। जिसे हम में से ही किसी कारीगर ने बनाया है। यदि हम इस नन्ही सी मूर्ति को जगन्नाथ मान लेते है। तो इस का निर्माता कारीगर, वह तो इस सृष्टि से उस पर कोई और प्रभु हो गया और आरती में सम्मिलित न होने के विषय में उन्होंने कहा ''मैं तो अपने विशाल जगन्ननाथ की आरती में प्रत्येक क्षण सम्मिलित रहता हूँ। उसकी आरती कभी समाप्त नहीं होती तथा वह निरंतर चलती ही रहती है।'' यह सुनकर पुजारी पूछने लगे–वह आरती कहां हो रही है। हमें भी दिखाए। इसके उत्तर में गुरूदेव ने कहा, ''गगन रूपी थाल में सूर्य और चद्रमा रूप दीपक जल रहे है। गगन में सितारे उस थाल में जड़े हुए मोती हैं। मलयानिल धुप–बती का कार्य कर रहा है और पवन विराट–स्वरूप भगवान के सिर पर चेवर झुला रहा है। इस संदर्भ में आप जी ने वाणी अच्चारण प्रारम्भ कर दी–
गगन मैं थालु रविचंदु दीपक बने तारिका मण्डल जनक मोती।।

धुप मलआनलो पवणु चवरू करे सगल बनराइ फूलन्त जोती।।
कैसी आरती होइ भव खण्डना तेरी आरती।।
अनहता सबद वाजंत भेरी।। रहाउ 8

निष्कर्ष

गुरूजी का जन्म ऐसे समय में हुआ जब धर्म पर विशेष वर्ग का प्रभाव था। धर्म के नाम पर आडम्बर ओर रूढिवाद का बोलबाला था बाबर भारत का आक्रमण कर निर्दोष लोगों को मोत के घाट उतार रहा था जनता के मन में न धर्म से कोई आशा कि किरण दिख रही थी और न ही शासको से कोई उम्मीद थी ऐसे अंधकारपूर्ण वातावरणमें गुरूजी ने भटकी हुई मानवता के जिवन में आशा की किरण फूंकने का काम किया वास्तविक धर्म का स्वरूप क्या होना चाहिए यह लोगों को समझाने में कामयाब रहे। नारी अधिकार का आडम्बरवाद रूढिवाद पर करारा हमला किया। ग्रहस्थ जिवन में रहकर व्यक्ति परमात्मा को प्राप्त कर सकता है। उसे खोजने के लिए कहीं बाहर जाने की आवश्यकता नहीं है। व्यक्ति को ईमानदारी नेक नियती और श्रम से कार्य करके कमाने वाले को भगवान भी अपने दिल में स्थान देते है और जो व्यक्ति दूसरों का हक मारता है शोषण करता है उसे भगवान भी माफ नहीं करता गुरू जी तो कभी साधारण मनुष्य सभी जिवों में भगवान का वास मानते है। इस प्रकार गुरू जी ने उस समय भटकी हुई मानवता के जिवन में प्रकाश, आशा, उत्साह, ईमानदारी, नेक नियती से काम करने के लिए प्रेरणा स्रोत्र का काम किया।

सन्दर्भ सूची

1. शर्मा, डा0 सत्यपाल 'भारतीय जन जागरण के महानायक' स्वराज्य मंदिर प्रकाशन (2008) दिल्ली पृ0 13, 14
2. वही, पृष्ठ –15
3. शर्मा, डा0 सत्यपाल 'गुरूवाणी सुधासार' गुरूकुल विधापीठ प्रकाशन (2006) दिल्ली पृ0 13
4. वही, पृष्ठ –13
5. शर्मा, डा0 सत्यपाल 'भारतीय जन जागरण के महानायक, पृष्ठ–20
6. वही, पृष्ठ –21
7. वही, पृष्ठ –21, 22
8. सिंह, जसबीर, 'जीवन वृतान्त श्री गुरू नानक देव जी, क्रांतिकारी गुरू नानक देव चैरिटेबल ट्रस्ट चण्डीगढ़, पृष्ट–62
9. पाठक, नरेन्द्र 'गुरू नानक देव' सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली पृष्ठ 103
10. शर्मा, डा0 सत्यपाल 'भारतीय जन जागरण के महानायक, पृष्ठ–31
11. वही, पृष्ठ –209, 210